उत्तर–प्रदेश–की–रामलीला–समितियों–का–सूचीकरण

आलोक पराड़कर

ich scheme/115/2014-15/11360

6/140, विपुल खंड, गोमती नगर,

लखनऊ-226010,

09415466001

हिन्दी साहित्य के कालजयी रचनाकार मुंशी प्रेमचन्द अपनी कहानी 'रामलीला' में लिखते हैं, '' एक जमाना वह था, जब मुझे भी रामलीला में आनन्द आता था। वह आनन्द उन्माद से कम न था। संयोगवश उन दिनों मेरे घर से बहुत थोड़ी दूर पर रामलीला का मैदान था और जिस घर में लीला पात्रों का रूप-रंग भरा जाता था, वह तो मेरे घर से बिल्कुल मिला हुआ था। दो बजे दिन से पात्रों की सजावट

होने लगती थी। मैं दोपहर ही से वहां जा बैठता और जिस उत्साह से दौड़-दौड़कर छोटे-मोटे काम करता, उस उत्साह से आज अपनी पेंशन लेने भी नहीं जाता। एक कोठरी में राजकुमारी का श्रृंगार होता था। उनकी देह में रामरज पीसकर पोती जाती, मुंह पर पाउडर लगाया जाता और पाउडर के ऊपर लाल, हरे, नीले रंग की बुंदिकियां लगायी जाती थीं। सारा माथा, भौंहें, गाल, ठोढ़ी बुंदिकियों से रच उठती थी। एक ही आदमी इस काम में कुशल था। वही बारी-बारी से तीनों पात्रों का श्रृंगार करता था। रंग की प्यालियों में पानी लाना, रामरज पीसना, पंखा झलना मेरा काम था। जब इन तैयारियों के बाद विमान निकलता तो उस पर रामचन्द्र के पीछे बैठकर मुझे जो उल्लास, जो गर्व, जो रोमांच होता था, वह अब लाट साहब के दरबार में कुरसी पर बैठकर भी नहीं होता। "

प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी के निकट स्थित लमही ग्राम में हुआ था और उनके जीवन का बड़ा हिस्सा वाराणसी में बीता। उन्होंने अपनी किशोरावस्था का यह वर्णन किया है जिससे पता चलता है कि रामलीला को लेकर लोगों में कैसा आकर्षण रहा है। रामलीला के कलाकारों के पास रूपसज्जा के महंगे साधन नहीं मिलते, जैसा कि रंगमंच या नृत्य के कलाकारों के पास होते हैं, उनके रूपसज्जाकार भी बहुत प्रशिक्षित नहीं होते। इन कलाकारों को रूपसज्जा के देसी साधनों से ही काम चलाना होता है। इनकी रूपसज्जा ऐसी होती है जिसके लिए मुंशी प्रेमचन्द ने रामरज पोतना का सही ही प्रयोग किया है। चेहरे पर देसी सामग्री के मेकअप की मोटी परत चढ़ती है फिर ललाट और आंखों के किनारे-

किनारे बुंदिकियां रची जाती हैं। कुछ रामलीला समितियों के पास आज भी महिला कलाकार उपलब्ध नहीं हैं और आज भी पुरुष ही महिला पात्रों की भूमिकाएं करते हैं। लेकिन दशहरा के अवसर पर जब नगरों, उपनगरों, गांवों, कस्बों में रामलीला के संवाद गूंजते हैं तो वहां जुटने वाली भीड़ से उसके आकर्षण की ताकत का अन्दाजा स्वतः ही लगाया जा सकता है।

यह श्रद्धा और आकर्षण का एक मिलाजुला रूप है जो इस सांस्कृतिक परम्परा को एक विशेष महत्व देता है। यही कारण है कि मनोरंजन के तमाम आधुनिक साधनों और लोगों की व्यस्ततम दिनचर्या के बावजूद वाराणसी के निकट रामनगर में जब करीब एक माह की रामलीला चलती है तो सैकड़ों लोग इसमें शामिल होने में गर्व का अनुभव करते हैं। वे शाम को नियमित तौर पर रामलीला में जाते हैं और लीला समाप्त होने पर लौटते हैं। वे लीला के महज दर्शक नहीं होते बल्कि इस लीला में खुद को शामिल समझते हैं। वे कभी राम की सेना के अंग बन जाते हैं तो कभी दरबार के। इसी प्रकार वाराणसी के नाटीइमली क्षेत्र में जब श्री चित्रकूट रामलीला समिति द्वारा भरतमिलाप की लीला होती है तो इस पांच मिनट के प्रसंग के लिए हजारों लोगों की भीड़ जुट पड़ती है। रास्ते बन्द कर दिए जाते हैं और दूर-दूर तक लोगों के सिर ही नजर आते हैं। इतना ही वाराणसी की विभिन्न रामलीलाओं के कई प्रसंग काफी प्रसिद्ध हैं। इनके लाग-विमान को देखने के लिए भी लोगों को हुजूम उमड़ पड़ता है।

दूसरे नगरों में भी रामलीला को लेकर ऐसा ही आकर्षण है। गांवों, कस्बों से लेकर उपनगरों, नगरों और महानगरों तक रामलीला के आयोजन होते हैं। विदेश में भी रामलीलाएं खूब होती हैं। इण्डोनेशिया, बाली, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, थाईलैण्ड, कोरिया, मारीशस सहित विभिन्न स्थलों पर रामलीलाएं होती हैं। इसका कारण यह भी है कि इन स्थानों पर भारतीय मूल के लोग हैं, जिनकी जड़ें भारतीय संस्कृति में हैं। हालांकि कई स्थानों पर रामकथा का रूप वह नहीं है जो भारत में प्रचलित है। अलग-अलग देशों में रामकथाओं में विभिन्नता है। इसी प्रकार रामलीला करने की शैलियां भी अलग है। भारत में भी रामलीला की कई शैलियां हैं। उत्तराखण्ड की रामलीलाओं की प्रस्तुति उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों की रामलीलाओं से भिन्न होती है। देश के कई प्रदेशों में रामलीलाओं का मंचन होता है लेकिन उत्तर भारत और खासकर उत्तर प्रदेश में इनका विशेष महत्व है। उत्तर प्रदेश के कई नगरों, उपनगरों, उनके कस्बों, गांवों में रामलीलाओं का मंचन किया जाता है।

रामलीला-एक सांस्कृतिक पर्व

आज जो रामलीला प्रचलित है उसको आरम्भ करने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास और उनके समकालीन मेघा भगत को दिया जाता है लेकिन यह भी माना जाता है कि रामकथा पर नाटकों के मंचन की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आई है। 'हरिवंश पुराण' के अनुसार, वरदत्त नामक नट ने रामायण की कथा पर

ब्रजवासियों के लिए नाटक का प्रदर्शन किया था। लव कुश द्वारा राम दरबार में रामकथा का गायन करने का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में मिलता है। रामचरित मानस में भी लीलाओं के संकेत मिलते हैं। तुलसीदास ने कई लीलाओं का वर्णन किया है जिनमें रघुनायक लीला, हनुमन्नाटक, पुतली नाटक और छायानाटक प्रमुख है। कागभुशुण्डी द्वारा बच्चों के साथ रामलीला करने का उल्लेख मिलता है तो यह भी वर्णन है कि राम के वनवास में जाने पर अयोध्या के लोग उनकी बाल लीलाओं का अभिनय कर उनको याद करते थे। मानस में लिखा है-खेलों तहीं बालकन्ह मीला, करौं सकल रघुनायक लीला। लेकिन आज जो रामलीला की परम्पराएं चल रही हैं उनके प्रारम्भ और प्रचार का श्रेय तुलसीदास और सन्त मेघा भगत को दिया जाता है।

लेकिन रामकथा पर आधारित कोई भी प्रस्तुति तो रामलीला नहीं होती। वाराणसी की रामलीलाओं के विशेषज्ञ डॉ. भानुशंकर मेहता अपनी पुस्तक 'सो काशी सेइअ कस न' के 'बनारस की रामलीलाएं' लेख में लेख में लिखते हैं-

'' भरतमंच पर उत्तर रामचरित हो या पारसी मंच पर आगा हश्र का 'सीता वनवास', भरतनाट्यम शैली में या कथक शैली में रामकथा कही जाय या कुडिअट्टम शैली में भास का नाटक खेला जाय, नौटंकी में धनुसजग्ग हो या आधुनिक बैले में, सभी को रामलीला कहा जा सकता है क्या? क्या यह रामलीला रामकथा के मंचन की संज्ञा मात्र है? या यह कोई विशेष विधा है जिसकी अपनी पहचान है, अपना अलिखित विधान है!'' वाराणसी के ज्ञान प्रवाह में 1998 में

दिए गए व्याख्यान में वह कहते हैं, ‘ लीला नाटक नहीं अपितु अनुष्ठान है, अस्तु इसके स्वरूप को नाटक या लोकनाट्य से अलग करके देखना आवश्यक है। लीला में अभिनेता नहीं बल्कि स्वरूप होते हैं जो भक्तों के लिए जीवन्त देवता हैं।..रामलीला जीते हैं-अर्थात् वह नाटक नहीं है कि देखें, उसकी समग्र कथा को जीना पड़ता है। रामलीला वास्तव में एक सांस्कृतिक पर्व है।’

वाराणसी के वरिष्ठ रंग अध्येता कुंवरजी अग्रवाल भी मानते हैं, ‘ तुलसी द्वारा प्रवर्तित रामलीला भारत में प्रचलित सैकड़ों पारम्परिक नाट्यरूपों में से बस एक रूप भर नहीं है। न ही वह राम नाट्यों और लीलाओं की बहुत सारी शैलियों में से महज एक और शैली मात्र है, जैसा कि राम नाट्य पर अनुसंधान करने वाले बहुत से लोगों ने प्रमाणित करने की कोशिशें की हैं। यह तो सामाजिक बदलावों से गहरा सरोकार रखने वाले एक ऐसे युगपुरुष की सम्पूर्ण कलात्मक रचनाधर्मिता का सबूत है जो अपनी बात कहने के लिए प्रचलित कला रूपों को मनचाहे तरीकों में ढाल सकता है।..वस्तुतः काशी ने रामलीला के रूप में एक ऐसा सर्वथा विलक्षण नाट्य रूप तैयार किया जो भारत में अपनी तरह का बिल्कुल अकेला है। दरअसल तुलसी ने अपना रामचरित मानस मुख्यतः पढ़ने वाली पोथी की तरह नहीं लिखा था। जितने विशाल जनसमुदाय तक तुलसी पहुंचना चाहते थे उस निरक्षर जनसागर तक तब पोथी की पहुंच कहां संभव थी,इसीलिए व्यापक जनसम्पर्क के तत्कालीन साधनों जैसे कथा वाचन, गायन, नाट्याभिनय आदि के उपयोग की दृष्टि तुलसी में मानस लेखन के आरम्भ से ही थी। उनका

रूपबन्ध भी इसी दृष्टि से चुना गया था। वस्तुत रामचरितमानस का रचना विधान बहुत कुछ मध्यकालीन पारम्परिक हिन्दी नाट्य के आलेखों जैसा ही है लेकिन इसके बावजूद तुलसीदास नहीं चाहते थे कि मानस का अभिनय तत्कालीन लोकप्रचलित नाट्य परम्परा में हो। कारण वह परम्परा भोड़े हास्य, नैतिक पतन और कामुकता का शिकार होकर बेहद भ्रष्ट हो चुकी थी।'(काशी की नाट्य परम्परा, आजकल, फरवरी 2006)

उत्तर प्रदेश की रामलीलाएं

उत्तर प्रदेश रामलीलाओं का उद्गम स्थल है, इसलिए यहां इसकी समृद्ध परम्परा नजर आती है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों, गांवों, कस्बों में रामलीलाओं का प्रभाव सर्वाधिक है। वाराणसी से, जिसे काशी या बनारस कहते

हैं, रामलीलाओं की शुरूआत मानी जाती हैं। यहां तुलसीदास और मेघा भगत ने रामलीलाओं का आरम्भ किया था। वाराणसी में आज रामलीला की कई शैलियां प्रचलित हैं। इसी प्रकार वाराणसी के निकट स्थित रामनगर नामक उपनगर में विश्वप्रसिद्ध रामलीला होती है। रामकथा में जिस अयोध्या और चित्रकूट जैसे नगरों का उल्लेख मिलता है, उन नगरों में भी रामलीला की समृद्ध परम्परा है। इसी प्रकार यह जानकर लोगों को आश्चर्य होता है कि लखनऊ में नवाबों के काल में भी रामलीलाओं का संरक्षण हुआ है। यहां कई रामलीलाओं के संवादों में उर्दू और फारसी के शब्दों की बहुतायत मिलती है। इसी प्रकार इलाहाबाद, जिसका प्राचीन नाम प्रयाग रहा है, में कहा जाता है कि सम्राट अकबर रामलीलाएं देखने आया करते थे और ऐसा भी कहा जाता है कि एक बार उन्होंने सीता विदाई की लीला में पालकी में कन्धा तक दिया था। कोंच, बलिया, मथुरा, कानपुर, आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा सहित कई नगरों में रामलीलाएं होती आई हैं।

वैसे, वाराणसी में जितनी रामलीलाएं होती हैं, शायद उतनी किसी और शहर में नहीं होती होंगी। रामलीला की कई शैलियां प्रदेश में देखने को मिलती हैं, इसके साथ ही क्षेत्र और अंचल का प्रभाव, उनकी बोलियां-भाषाएं, संस्कृति-परम्परा इनमें खूब नजर आती हैं। रामलीला की अवधि एक दिन से लेकर एक माह तक होती है। हिन्दुओं के देवता के रूप में पूजे जाने वाले राम के जीवन पर आधारित होने के बावजूद इनमें विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों की भागीदारी होती रही है। इस प्रकार इसने साम्प्रदायिक सीमाओं को भी तोड़ा है। रामलीला के आयोजन

प्रायः आश्विन एवं कार्तिक माह में होते रहे हैं। रामनगर की लीला अनन्त चतुर्दशी (भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी) से आरम्भ होकर शरद पूर्णिमा तक चलती है। अयोध्या सहित कई नगरों में रामनवमी के अवसर पर रामलीला का आयोजन होता है।

रामलीलाओं के मंचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश के ऐसे कुछ प्रमुख नगर, उपनगर, तहसील, कस्बे इस प्रकार हैं-

1. वाराणसी
2. रामनगर
3. लखनऊ
4. बख्शी का तालाब
5. आगरा
6. अयोध्या
7. इलाहाबाद
8. कानपुर
9. कोंच

10.रसड़ा(बलिया)

11. बरेली

12. गोरखपुर

13. जौनपुर

14. अकबरपुर

15. जसवन्तनगर

16. मिर्जापुर

वाराणसी की रामलीला

वाराणसी का एक नाम बनारस भी है। प्रख्यात शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान कहा करते थे, 'बनारस का अर्थ है जहां रस हमेशा बना रहता है'। बनारस को यह रस कहां से मिलता है और यह रस बना कैसे रहता है? वास्तव में यह रस उसे अपनी परम्पराओं से, अपनी संस्कृति से मिलता है

जिसमें उसकी जड़ें गहरे तक जमीं हुई हैं और जो धारा आज भी बहती दिखती है। प्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह 'बनारस' पर लिखी अपनी कविता में कहते हैं-'इस शहर में धूल धीरे-धीरे उड़ती है/ धीरे-धीरे चलते हैं लोग/ धीरे-धीरे बजते हैं घण्टे/ शाम धीरे-धीरे होती है/ यह धीरे-धीरे होना/ धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय/ दृढ़ता से बांधे है समूचे शहर को/ इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है/ कि हिलता नहीं है कुछ भी/ कि जो चीज जहां थी/ वहीं पर रखी है/ कि गंगा वहीं है/ कि वहीं पर बंधी है नाव/ कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊं/ सैकड़ो बरस से..'।

कहने का अर्थ यह है कि बनारस में जल्दी कुछ बदलता नहीं है। आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाने के बावजूद शहर का गहरा जुड़ाव उसकी प्राचीन परम्पराओं से, अतीत से आज भी बना हुआ है। जो इसके स्वभाव से अपरिचित हैं उन्हें आश्चर्य हो सकता है कि नाटी इमली के भरत मिलाप की पांच मिनट की लीला को देखने के लिए पांच लाख से अधिक लोग कैसे जुट सकते हैं या कैसे सैकड़ों लोग अपने कामकाज छोड़कर, दुकानें बन्द कर एक माह तक नियमित रामनगर की रामलीलाओं में नेमी बनकर शरीक हो सकते हैं। वास्तव में इसे समझने के लिए बनारस को समझना जरूरी है।

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. मोतीचन्द्र ने वाराणसी के इतिहास पर लिखी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'काशी का इतिहास' में अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के जिन प्रमुख मेलों, त्योहारों की चर्चा की है उनमें रामलीला भी है। मोतीचन्द्र लिखते हैं,'

कुआर कृष्ण 2 से लेकर कुआर सुदी 15 तक बनारस में अनेक रामलीलाएं होती हैं जिनमें चित्रकूट की रामलीला शायद सोलहवीं सदी के अन्त से शुरू हुई। कुआर सदी 10 को चौकाघाट पर विजयादशमी का मेला लगता है। उस दिन अस्त्र-शस्त्र और घोड़ों वाहनों इत्यादि की पूजा होती है तथा लोग नीलकठोत्सर्ग को पुण्य कार्य मानते हैं। एकादशी को नाटी इमली पर विश्व का अनूठा नाटक, सबसे बड़ी, सबसे अल्पकालिक लीला, भरत मिलाप होता है। दर्शक तीन-चार लाख, लीला की अवधि पांच मिनट।'

वाराणसी की रामलीला के बारे में कहा जाता है कि यह आज से करीब 471 साल पहले शुरू हुई थी। वाराणसी की रामलीला के इतिहास को जानने का एक आधार इलाहाबाद हाईकोर्ट का एक मुकदमा है जो मुकदमा छन्नूदत्त व्यास और बाबू नन्दन महन्त के बीच हुआ था।1910 में हुए इस मुकदमें का उद्देश्य महन्त पद के विवाद को दूर करना था लेकिन इसे और इस मुकदमें का उद्देश्य रामलीला के महन्त पद के विवाद का निपटारा करना था लेकिन इसके निर्णय में न्यायालय ने रामलीला की प्राचीनता का उल्लेख किया है। न्यायमूर्तियों ने अपने फैसले में कहा था, 'भारत एक ऐसा देश है जहां किसी मंदिर या मठ विशेष की चहारदीवारी में सीमित न रहकर खुले आसमान के नीचे लीलाओं का आयोजन शताब्दियों से होता रहा है। कालक्रम में भारत के प्रायः सभी महत्वपूर्ण नगरों में इस प्रकार की किसी मंदिर विशेष से असम्बद्ध रामलीलाएं आयोजित होती रहीं।' चित्रकूट रामलीला के सम्बन्ध में इस फैसले में कहा गया है, ' कुछ गवाहों का तो यह

कथन है कि संवत् 1600 या उसके आसपास मेघा भगत ने इसे विकसित किया था।' (इलाहाबाद ला जर्नल रिपोर्ट्स, 1910)

इसे भी पहले सन् 1868 ई. में प्रकाशित एम.ए. शेरिंग की पुस्तक 'बनारस: द सेक्रेड सिटी ऑफ द हिंदूज़' में वाराणसी की रामलीला का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-'चित्रकूट और अन्य स्थानों पर आयोजित रामलीला मेला क्वार बदी की आठवीं तिथि से प्रारम्भ होकर क्वार सुदी की 15 वीं तिथि तक आयोजित होती है। यह उत्सव राम के वीर चरित्र की सार्वजनिक नाट्य प्रस्तुति से सम्बन्धित है। नगर में चित्रकूट अत्यन्त प्राचीन स्थान है जहाँ यह आयोजित होती है। किन्तु नगर के अनेकानेक समृद्ध निवासी और विशेषत: महाराज बनारस भी इसी प्रकार के आयोजन अपने व्यय पर आयोजित करके सार्वजनिक मनोरंजन में सहभागी होते हैं। इनमें से एक या अनेक स्थानों पर राम की उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करने वाली रामायण का प्रारंभ से अंत तक सार्वजनिक गायन होता है। राम उनके सहयोगियों तथा सहायकों के स्वरूप अभिराम साज-सज्जा के साथ इस प्रदर्शनी में भाग लेते हैं और तब तक युद्ध चलता है जब तक राम के शत्रु पराजित, परास्त और नष्ट नहीं हो जाते। बनारस की रामलीला संभवत: सबसे अधिक प्रसिद्ध है और सबसे अधिक दर्शकों को आकृष्ट करती है। जनरुचि के अनेक प्रकार के प्रदर्शन और परम्परागत भव्यता इस लीला से संबद्ध है। क्वार सुदी दशमी को चौकाघाट में आयोजित इसके उत्सव में जिसे दशहरा या विजया दशमी कहा जाता है, जब राम रावण से युद्ध

करते हैं और रावण मारा जाता है तो अनुमानत: 30 हज़ार से अधिक भारी भीड़ यहाँ उपस्थित रहती है। यहाँ से घर लौटते समय लोग रावण की इस भूमि चौकाघाट से थोड़ी मिट्टी या राख अपने साथ घर ले जाते हैं क्योंकि यह सामान्य विश्वास है कि लंका की भूमि पूरी तरह सोने की थी। इस दिन शमी के वृक्ष की पूजा होती है और नीलकण्ठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है।"

माना जाता है कि वाराणसी में चित्रकूट की रामलीला सबसे पुरानी है जो नारायण दास दवा्रा शुरू की गई है। नारायण दास बाद में तुलसी दास के शिष्य हो गए थे और मेघा भगत कहलाए । प्राचीनता की दृष्टि से फिर तुलसीदास की रामलीलाएं है जो अस्सी एवं अन्य कई स्थानों पर होती है और इसके बाद रामनगर की रामलीला है। वाराणसी की रामलीलाओं में व्यापक जनसहभागिता है और उसका मुख्य कारण यह है कि यहाँ जो भी ऐसे आयोजन हैं, उनमें आज भी लोगों का गहरा जुड़ाव है और हज़ारों-लाखों की भीड़ है। ये महज एक आयोजन नहीं हैं, एक सांस्कृतिक अनुष्ठान हैं और यह बात केवल रामलीला पर लागू नहीं होती बल्कि यह कई दूसरी लीलाओं पर भी लागू है, यहाँ बहुत बाद में शुरू देव दीपावली पर भी लागू है और संकटमोचन संगीत समारोह पर भी। इन आयोजनों में काशीवासी श्रोता या दर्शक नहीं होते, वे भी इसके पात्र होते हैं, इसमें शामिल होते हैं और एक अनऔपचारिक सम्बन्ध होता है। देव दीपावली का उत्सव आज जिस रूप में है उसके पीछे वह घर घर की भागीदारी है, कहीं से तेल आ रहा है तो कोई दीया की व्यवस्था कर रहा। और संकटमोचन संगीत समारोह जहाँ प्रेक्षागृहों की

औपचारिकता नहीं है, कलाकार से कुछ ही हाथ की दूरी पर मंच पर ही उसके प्रशंसक संगीत प्रेमी बैठे हैं या फिर सामने इतने करीब हैं कि हाथ बढ़ाकर छू सकते हैं।

वाराणसी के निकट स्थित रामनगर की रामलीला भी इसका उदाहरण है। अवध की लीला चलती है तो दर्शक अवधवासी हैं, रावण का दरबार लगा हो तो उनके दरबारी हैं या फिर राम वन जा रहें हैं तो साथ-साथ वनवासी होकर चले जा रहे हैं। रामलीला विशेषज्ञ भानुशंकर मेहता इसे घटित लीला कहते हैं अर्थात कोई दर्शक नहीं हैं। सब कुछ वैसे ही घटित हो रहा है जैसा कि किसी समय हुआ था। मेहता जी एवं अन्य रामलीला मर्मज्ञों ने काशी और उसके उपनगर कहे जानने वाले रामनगर की लीला को तीन रूपों में बांट रखा है। ये विभेद उनके मंचीय रूप के कारण बनाए गए हैं। रामनगर की रामलीला घटित रामलीला है, इसी प्रकार इसका दूसरा स्वरूप है तुलसी की रामलीला अर्थात चारघाट की रामलीला और तीसरा स्वरूप है चित्रकूट रामलीला अर्थात झाँकी रामलीला।तुलसीदास द्वारा शुरू की गई रामलीलाओं में मंच की कल्पना ऐसी की गई है कि दर्शक और पात्र की विभाजक रेखा समाप्त हो जाती है। इसके चार कोने या मंच हैं। एक ओर स्वरूप के लिए, दूसरी ओर लीला के राज पुरुष के लिए, तीसरी ओर लीला के स्त्री पात्रों का मंच और चौथी ओर रामायण पाठ करने वाले रामायणी का मंच। चित्रकूट का भरतमिलाप प्रसिद्ध है तो चेतगंज की नक्कटैया भी काफी लोकप्रिय है। करवा चौथ अर्थात कार्तिक कृष्ण की चतुर्थी को इसका आयोजन

होता है और इसमें शूर्पणखा की नाक कटती देखने के लिए हज़ारों की भीड़ जुटती है। बताते हैं कि साधु फत्तेराम ने इसे शुरू करने के लिए अनूठी तरकीब निकाली। उन्होंने दुकानदारों से कहा कि रामलीला के नाम पर प्रतिदिन एक पैसा दो और इस प्रकार वर्ष भर में काफी पैसा जुट गया और रामलीला होने लगी। यहां पूरी रामलीला तो उतनी लोकप्रिय नहीं हो सकी लेकिन नक्कटैया के मेले में जो भीड़ होती है वह बड़े-बड़े आयोजनों में नहीं होती है।

वाराणसी की प्रमुख रामलीला समितियों और उनके कुछ प्रसिद्ध प्रसंगों, लीलाओं की सूची इस प्रकार हैं-

चित्रकूट- भरतमिलाप

रामनगर- विजयादशमी, भरतमिलाप, रामराज्याभिषेक

भदैनी- रावण वध, भरतमिलाप

मौनीबाबा- भरतमिलाप, नक्कटैया, राजगद्दी

लाटभैरव- नक्कटैया, भरतमिलाप

चेतगंज-नक्कटैया

जैतपुरा- नक्कटैया

नदेसर- भरतमिलाप, राज्यभिषेक

गायघाट- भरतमिलाप

कोनिया- नक्कटैया

शिवपुर- भरतमिलाप

दारानगर- नक्कटैया, राज्याभिषेक

काशीपुरा- लक्ष्मणशक्ति, भरतमिलाप

शिवानगर (औरंगाबाद)-नक्कटैया, भरतमिलाप, राज्यतिलक

खोजवां-नक्कटैया, भरतमिलाप, राजगद्दी

लक्सा- रामराज्याभिषेक

डीजल रेल कारखाना- विजयादशमी

खजुरी (पाण्डेयपुर)- लंकादहन, विजयादशमी

भोजूबीर- विजयादशमी

हुकुलगंज-रावणवध, भरतमिलाप

अर्दली बाजार-रावण वध, भरतमिलाप

सारनाथ-भरतमिलाप

इनके अतिरिक्त वाराणसी में अन्य स्थानों पर होती आईं रामलीलाएं इस प्रकार हैं-

रामापुरा

कैण्ट

जतनबर

वरुणापुल

सदर बाजार

औसानगंज

मणिकर्णिका

राजमंदिर

पंचगंगा

सोराकुंआ-बुलानाला

लहरतारा

अलईपुर

आशापुर

कचहरी

न्यू लोको कालोनी

लालपुर

वाराणसी नगर और आसपास के इलाकों में करीब 35 से अधिक रामलीला समितियां रामलीला का आयोजन करती हैं। जिले में ऐसी समितियों की संख्या 50 से अधिक है। वाराणसी नगर और आसपास के क्षेत्रों में होने वाली रामलीलाएं हालांकि पांच से लेकर 30 दिनों तक चलती हैं लेकिन हर समिति की किन्हीं खास प्रसंगों, लीलाओं की विशेष प्रसिद्धि है। उन लीलाओं के लिए विशेष तौर पर लोगों का जमावड़ा होता है। वाराणसी जिले में जिन प्रमुख उपनगरों, कस्बों, गांवों में रामलीलाएं होती हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं-

लोहता

नियारडीह

चिरईगांव

कोरौता बाजार

गोपपुर

गंगापुर

रोहनियां बाजार

अमावर

तिलमापुर

आराजीलाइन्स

जाल्हूपुर

चौबेपुर

सुरियांवा

फूलपुर

कोठवां

जंगीगंज

असवारी

शाहशाहपुर

उसेहविया

अजगरा

नारायणपुर

चौबेपुर खुर्द

शहसापुर

कमालपुर

बड़ागांव

कुकरैठी

पालनापुर

खमरिया

ज्ञानपुर

भदोही नई बाजार

सहासरपुर

सेमराय

बनकट

डीह-बड़ागांव

बमुनी

चमरहां बाजार

राजातालाब

खरगुपुर

सेवापुरी

गोपीगंज-माधोरामपुर

धौरहरा

ऊंज

हरहुआ-बजरंगनगर

खरावन

अनेई

बरकी

मधईपुर

चोलापुर

सेवापुरी-बहकी, भीखमपुर, स्टेशन रोड, ऊपरवाल

सोनैचा

हनुमानगंज

जक्खनी

टुंडी

झांवर

वाराणसी में होने वाली रामलीलाओं में प्रतिदिन होने वाली लीलाओं का क्रम इस प्रकार रहता है-

श्री मणिकर्णिका रामलीला समिति

स्थान- मणिकर्णिका घाट, कुंजगली, नीमतले, चौक, पशुपतेश्वर, सिधिंया घाट, नीलकण्ठ

भाद्र शुक्ल 15 मुकुट पूजा

आश्विन कृष्ण 1 रावण जन्म तप, क्षीरसागर की झांकी

आश्विन कृष्ण 2 राम जन्म, बाल लीला, विश्वामित्र आगमन

आश्विन कृष्ण 3 ताड़का वध, मारीच उड़न, अहिल्या अवतरण

आश्विन कृष्ण 4 मीना बाजार

आश्विन कृष्ण 5 फुलवारी, अष्ट सखि संवाद

आश्विन कृष्ण 7 धनुष यज्ञ, परशुराम लक्ष्मण संवाद

आश्विन कृष्ण 8 राम बारात विवाह एवं विदाई

आश्विन कृष्ण 9 रामराज्यभिषेक की तैयारी, कोपभवन, वनगमन

आश्विन कृष्ण 10 निषाद मिलन, चित्रकूट वास

आश्विन कृष्ण 11 सुमन्त आगमन, दशमरण क्रिया, अवध में सभा

आश्विन कृष्ण 12 भरत का निषाद मिलन, भरत मनावन

आश्विन कृष्ण 13 जनक सभा, भरत सभा, नन्दी ग्राम की झांकी

आश्विन शुक्ल 1 जयन्त नेत्र भंग

आश्विन शुक्ल 2 नक्कटैया

आश्विन शुक्ल 3 सीताहरण, गिद्धराज क्रिया, राम विलाप

आश्विन शुक्ल 4 हनुमान मिलन, बाली वध

आश्विन शुक्ल 5 हनुमान जी का सिन्धु पार जाना, लंका दहन

आश्विन शुक्ल 6 रामजी का सिन्धु आगमन, रामेश्वर पूजन

आश्विन शुक्ल 7 सुवेलगिरि की झांकी, अंगद विस्तार

आश्विन शुक्ल 8 चारो फाटक की लड़ाई, लक्ष्मण शक्ति, राम विलाप

आश्विन शुक्ल 9 कुंभकरण मेघनाद वध

आश्विन शुक्ल 10 रावण का रणभूमि अवलोकन, युद्ध

आश्विन शुक्ल 11 रावण वध क्रिया, देवस्तुति, जानकी मिलन

आश्विन शुक्ल 12 भरतमिलाप

आश्विन शुक्ल 14 रामराज्याभिषेक

आश्विन शुक्ल 15 वानर विदाई दिन में 11 बजे

श्री चित्रकूट रामलीला समिति

स्थान- बड़ा गणेश, ईश्वरगंगी, रामलीला मैदान-धूपचण्डी, नयी बस्ती, चित्रकूट रामलीला मैदान, पिशाचमोचन मार्ग, चौकाघाट, रामेश्वर मन्दिर, सिन्धिया घाट

आश्विन कृष्ण 9 मुकुटपूजन

आश्विन कृष्ण 10 राज्याभिषेक

आश्विन कृष्ण 11 कोपभवन

आश्विन कृष्ण 12 वनगमन

आश्विन कृष्ण 13 श्रीराम घरनैल

आश्विन कृष्ण 14 श्री भरत घरनैल

आश्विन कृष्ण 15 श्री भरत मनावन

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा श्री भरत सभा

आश्विन शुक्ल 2 श्री जनक सभा

आश्विन शुक्ल 3 भरत विदाई, नन्दी ग्राम की झांकी

आश्विन शुक्ल 4 जयन्त लडाई, धुलिया राक्षस वध

आश्विन शुक्ल 5 नक्कटैया

आश्विन शुक्ल 6 शबरी मंगल और हनुमान मिलन

आश्विन शुक्ल 7 बाली सुग्रीव की लड़ाई, लंका दहन

आश्विन शुक्ल 8 रामेश्वरपूजन एवं गिरिसुवेल की झांकी

आश्विन शुक्ल 9 चारो फाटक की लड़ाई, लक्ष्मण शक्ति

आश्विन शुक्ल 10 रावण वध, श्रीविजयादशमी

आश्विन शुक्ल 11 श्री भरतमिलाप

आश्विन शुक्ल 12 धनुषबाण की झांकी

आश्विन शुक्ल 13 विश्राम की झांकी, राजगद्दी

आश्विन शुक्ल 14 सनकसनन्दन

आश्विन पूर्णिमा दशोअवतार की झांकी

<u>श्री रामलीला, रामनगर</u>

लीला-1 रावण का जन्म, दिग्विजय, क्षीर सागर की झांकी, देवस्तुति, आकाशवाणी(स्थान-रामबाग के पास)

लीला-2 अवध में यज्ञ, अद्भुत झांकी, श्रीरामजी आदि का जन्म, विराट दर्शन, बाललीला, यज्ञोपवीत, मृगया(स्थान-अवध)

लीला-3 विश्वामित्र आगमन, ताड़का सुबाहु वध, मारीच-निरसन, अहिल्या तारण, गंगा दर्शन, मिथिला प्रवेश, श्रीजनक मिलन (स्थान-अवध से आरंभ, जनकपुर तक की यात्रा)

लीला-4 श्रीजनकपुर दर्शन, अष्टसखी संवाद, फुलवारी (स्थान-जनकपुर)

लीला-5 धनुष यज्ञ, परशुराम संवाद (स्थान-जनकपुर, धनुषयज्ञ)

लीला-6 श्रीअवध से बारात का प्रस्थान, जनकपुर में विवाह (स्थान-रामविवाह, अवध, जनकपुर)

लीला-7 जनकपुर से बारात की विदाई, अवध में परिछन तथा शयन की झांकी(स्थान-जनकपुर, अवधपुरी)

लीला-8 राज्याभिषेक सभारंभ, कोपभवन (स्थान-कोपभवन , अवध)

लीला-9 वन गमन, निषाद मिलन, श्रीलक्ष्मणकृत गीता उपदेश (स्थान-निषाद आश्रम तक)

लीला-10 गंगावतरण, भरद्वाज समागम, यमुनातरण, ग्रामवासी मिलन, वाल्मीकि समागम, चित्रकूट निवास, सुमंत का अयोध्यागमन, श्रीदशरथ... (स्थान-गंगापार से चित्रकूट तक वनयात्रा)

लीला-11 श्रीअवध में भरतागमन, सभा, श्रीभरत का चित्रकूट प्रयाण, निषाद मिलन, गंगावतरण, भरद्वाज आश्रम निवास (स्थान-अवध, चित्रकूट, प्रयाग)

लीला-12 -भरत का आगमन, ग्रामवासी मिलन, रामचन्द्र दर्शन (स्थान- चित्रकूट, प्रयाग)

लीला-13 वशिष्ठ सभा, श्रीचित्रकूट में जनकागमन तथा सभा(स्थान-चित्रकूट)

लीला-14 भरत जी का चित्रकूट से विदा होकर अयोध्या गमन, नंदीग्राम निवास, (स्थान-चित्रकूट, अवध, नंदीग्राम)

लीला-15 जयंत नेत्र भंग, अत्रि मुनि मिलन, विराट वध, पंचवटी में निवास(स्थान-चित्रकूट)

लीला-16 नासिका छेदन, खरदूषण वध, जानकीहरण, रावण गृद्धराज युद्ध (स्थान-लंका, पंचवटी)

लीला-17 श्रीजानकी वियोग में श्रीरामकृत विलाप व जटायु की अन्त्येष्टि, शबरी फल भोजन, वन वर्णन, पंपासर पर्यटन, नारद हनुमान सुग्रीव मिलन (स्थान-पंचवटी से पंपासर)

लीला-18 -बालि वध, वर्षा वर्णन, हनुमान का लंका प्रस्थान, संपाती मिलन(स्थान- किष्किन्धा सागर तट)

लीला-19 हनुमान का सिंधुपार गमन, श्री जानकी दर्शन, लंका दहन, पुनः श्रीपदांबुज समागम, समाचार निवेदन (स्थान-सागर, लंका)

लीला-20 लंका में विभीषण निष्कासन, सेतु निर्माण (स्थान-लंका, सागर)

लीला-21 श्रीराम का सेना सहित सिंधु पार, सुबेलगिरि विश्राम, अंगद विस्तार (स्थान-सागर, लंका)

लीला-22 चारो फाटक की लड़ाई, लक्ष्मण पर शक्ति प्रयोग(स्थान-लंका)

लीला-23 कुंभकरण युद्ध एवं वध, मेघनाद युद्ध, नागफास तथा यज्ञ और वध (स्थान-रणक्षेत्र)

लीला-24 राम रावण युद्ध(स्थान-रणक्षेत्र)

लीला-25 रावण युद्ध, रणभूमि अवलोकन(स्थान-लंका)

लीला-26 रावण का रण क्षेत्र में मृत्यु शय्या पर शयन, श्रीराम विजय (स्थान-लंका)

लीला-27 विभीषण का राजतिलक, श्रीजानकी मिलन, देवस्तुति, श्रीराम का अवध प्रयाण (स्थान-लंका)

लीला-28 भरत मिलाप (स्थान-अवध)

लीला-29 श्रीराम राज्याभिषेक (स्थान-अवध)

लीला-30 श्रीराम उपवन विहार, सनकादिक मिलन (स्थान-रामबाग की बारादरी)

लीला-31 (स्थान-किला)-कोट विदाई

लखनऊ की रामलीला

लखनऊ पर लिखी प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक 'पुराना लखनऊ' (गुजिश्ता लखनऊ) में अब्दुल हलीम 'शरर' (जन्म 1860, निधन 1926) ने अपनी पुस्तक

की भूमिका में लिखा है, 'राजा राम रामचन्द्र जी के महान और बेमिसाल कारनामे इतने अधिक हैं कि इतिहास उन्हें अपने अन्दर समोने में असमर्थ है और यही कारण है कि उन्होंने इतिहास की सीमाएं लांघकर धार्मिक पवित्र का रूप धारण कर लिया है। आज हिन्दुस्तानी का शायद ही कोई ऐसा अभागा गांव होगा जहां उनकी याद हर साल रामलीला के धार्मिक नाटक के माध्यम से ताजा न कर ली जाती हो।'

शरर ने इस पुस्तक में लखनऊ की स्थापना और इसके नामकरण को लेकर जो अनुमान व्यक्त किए हैं उनमें से एक प्रमुख राजा रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण से जुड़ा है। शरर के अनुसार, 'कहते हैं कि राजा रामचन्द्र जी लंका को जीतकर और अपने वनवास का समय पूरा करके जब सिंहासन पर बैठे तो यह प्रदेश उन्होंने जागीर के रूप में वन में अपने साथी और हमदर्द भाई लक्ष्मण को दे दिया। चुनांचे उन्हीं के निवास या आगमन से यहां नदी के किनारे एक ऊंचे टेकरे पर एक बस्ती आबाद हो गई जिसका नाम उस समय से लक्ष्मणपुर रखा गया और टीला लक्ष्मण टीला मशहूर हुआ।'

सम्राट अकबर ने 1590 में देश को जब 12 प्रान्तों में बांटा तो अवध प्रान्त की राजधानी लखनऊ बनी। गोस्वामी तुलसीदास अकबर के समकालीन थे और उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रामचरित मानस के लिए भी अवधी का ही चुनाव किया था। अकबर ने 'रामसिय सिक्का' चलाया था जिस पर अवधी में रामसिय

लिखा हुआ है। हिन्दुओं के आराध्य देव राजा राम की नगरी अयोध्या यहां से महज 120 किलोमीटर दूर है। वैसे भी जिस नगर के नामकरण के कारणों में रामकथा की मान्यता जुड़ी हो, रामकथा का प्रमुख क्षेत्र अयोध्या जिस नगर से थोड़ी ही दूर हो, जहां वह बोली प्रचार में हो जो रामकथा के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रामचरित मानस' की है, वह नगर रामलीला से कैसे वंचित रह सकता है?

लखनऊ की प्रचीनतम रामलीलाओं में बाबा हजाराबाग और ऐशबाग की रामलीलाएं उल्लेखनीय हैं लेकिन नगर और आसपास के इलाकों में दो दर्जन से अधिक स्थानों पर रामलीलाएं धूमधाम से आयोजित की जाती हैं। इनमें सदर, मौसमगंज, चौक, राजाजीपुरम, मड़ियांव, खजुआ, डालीगंज, खदरा, महोना, रानीगंज, बागठोला, गोसाइगंज, आलमबाग, बख्शी का तालाब, इटौंजा, त्रिवेणीनगर, कल्याणपुर की रामलीलाएं शामिल हैं। लखनऊ में रामलीला के आरम्भ की प्रेरणा देश के दूसरे हिस्सों की तरह ही गोस्वामी तुलसीदास से मानी जाती है।

लखनऊ पर कई पुस्तकों का लिखने करने वाले योगेश प्रवीन लखनऊ की रामलीलाओं का इतिहास बताते हुए एक स्थान पर लिखते हैं, 'कहा जाता है कि लखनऊ जनपद में रामलीला का सूत्रपात लक्ष्मण टीले के निकट तुलसीदास जी की प्रेरणा से हुआ। मुगल सल्तनत के पतन काल में लक्ष्मण टीले की रूपलेखा दिल्ली नरेश आलमगीर के आदेश से यहां के तत्कालीन गवर्नर द्वारा बदली गई

और उसके आसपास का कुल इलाका शेखजादों के सुपुर्द कर दिया गया। फिर यह रामलीला धनुष यज्ञ के नाम से इटौंजा, मऊ, मोहनलालगंज, नगराम, आदि कस्बों में बिखर गई जहां ब्राम्हणों और ठाकुरों का जोर था। अट्ठारहवीं सदी के उत्तर मध्य की बात है। एक महात्मा लखनऊ के पश्चिम में पुराने सूरजकुण्ड पर कठिन तपस्या किया करते थे। शाहदरा के पास से गुजरने वाले बैलों के व्यापारी नत्थामल जाट ने उन्हें कई बार देखा और उनका मुरीद हो गया। उसने उन्हें अपने अनुरोध पर पहले गढ़ी पीर खां में बुलाया फिर निकट का एक जंगल साफ करके महात्मा जी के रहने योग्य आश्रम बनवाया। यही सिद्ध सन्त बाद में अपने नित नए चमत्कारों के कारण दूर तक प्रसिद्ध हो गए। उनकी शोहरत जब नवाब आसफुद्दौला के दरबार में पहुंची तो वे भी उनके दर्शन के लिए आश्रम में आए। बाबा जी की सिद्धी और साधना से प्रभावित होकर नवाब ने उन्हें लखनऊ और गोण्डा जिले में एक हजार गांवों की जागीर प्रदान की जिससे वह बाबा हजारा के नाम से मशहूर हो गए। नवाब आसफुद्दौला की मृत्यु के दो वर्ष बाद ही 1799 में बाबा का बैकुण्ठवास हो गया और तब उनके उत्तराधिकारी अमृतदास जी उनकी गद्दी पर बैठे। गद्दी के तीसरे महन्त बाबा गुरुनारायण दास ने ही नवाब सआदत अली खां के शासनकाल में 1810 में रामलीला और दशहरा मनाने की परम्परा आरम्भ की। लगभग दो सदी पुरानी यही रामलीला बाबा हजारा बाग की रामलीला के नाम से जानी जाती है। पहले यहां की लीला के लिए काशी और अयोध्या से मण्डलियां बुलाई जाती थीं। अयोध्या, नकपुरी, दण्डकवन और लंका जैसे स्थलों की अलग-अलग रचना की जाती थी और रावण, मेघनाद के विशाल पुतले बनवाए जाते थे। बाबा हजाराबाग के रियासती टाट-बाट वाले ऐतिहासिक

क्षेत्र में बनी हुई पुरानी हवेली, ऊंचे फाटक और समाधि मन्दिर दर्शनीय हैं, जहां हर चौदह वर्ष में एक विशेष उत्सव में साधु-सन्तों का जमाड़वा लगता है।' (इतिहास के झरोखे से लखनवी रामलीला के चन्द्र पड़ाव, 'हिन्दस्तान', 20 अगस्त 2007)

लखनऊ की रामलीलाओं की विशेषताओं में कल्याणपुर की रामलीला का इस दृष्टि से उल्लेख जरूरी है कि यहां कुमाऊंनी रामलीला होती है। इस कुमाऊंनी रामलीला की खास बात यह कि इसमें अभिनय करने वाले ज्यादातर बच्चे होते हैं और दूसरे उनके संवाद बोलने की जगह गाए जाते हैं। शास्त्रीय रागों पर आधारित गीत रूपी संवादों को लोग खूब पसन्द करते हैं। पहाड़ियों की रामलीला मुरलीनगर की रामलीला भी किसी समय खूब लोकप्रिय थी लेकिन कुमाऊं परिषद की यह रामलीला मुरलीनगर का पार्क छिन जाने के कारण बन्द हो गई।

लखनऊ की प्राचीन रामलीलाओं में से है ऐशबाग की रामलीला जिसका मंचन ऐशबाग के वाटर वर्क्स रोड स्थित रामलीला परिसर में होता है। अब इसका आयोजन 12 दिनों का होना लगा है लेकिन इसमें बाहर से नाट्य दल बुलाए जाने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों से यहां कोलकाता के नाट्य दल द्वारा रामलीला का मंचन किया जा रहा है। ऐशबाग की रामलीला के आरम्भ को लेकर व्यापक शोध एवं अध्ययन की आवश्यक है क्योंकि इसके आयोजकों का दावा है कि इसका आरम्भ स्वत: गोस्वामी तुलसीदास द्वारा किया गया आयोजन समिति के

संयोजक हरिश्चन्द्र अग्रवाल दावा करते हैं कि हमें अपने पूर्व पदाधिकारियों से यह ज्ञात होता आया है कि इस रामलीला का आरम्भ तुलसीदास द्वारा सोलहवीं शताब्दी से पूर्व कराया गया। ऐशबाग की रामलीला में पिछले इन 194 वर्षों में काफी परिवर्तन आए हैं। समिति के पास राम भवन हाल, विशाल खुला प्रेक्षागृह एवं वातानुकूलित तुलसी शोध संस्थान है। समिति इधर कुछ वर्षों से कोलकाता के भास्कर नाट्य कला केन्द्र नामक संस्था को आमंत्रित करती है जो यहां रामलीला के विविध प्रसंगों को मंचित करती है। ऐशबाग की रामलीला का भरत मिलाप प्रसिद्ध है जो दशहरे के दूसरे दिन होता है। रघुवर राम की अवध वापसी की यह शोभायात्रा हाथी, घोड़ों सहित देवरथों और पौराणिक झांकियों से सजी होती है जिसके अन्त में भव्य रथ पर राम, लक्ष्मण, सीता तथा हनुमान होते हैं। योगेश प्रवीन एक अन्य स्थान पर कहते हैं कि दशहरे के जुलूस प्राचीन परम्पराओं की विजय यात्रा से मिलते-जुलते हैं जिनका श्रीगणेश त्रेतायुग में हुआ था। अर्जुन ने भी राजा विराट की गायों का रक्षा के लिए इसी दिन कौरव सेना पर आक्रमण किया था। कालान्तर में राजपूत, राजे महराजे वर्षा ऋतु के बाद दलबल सहित इसी दिन विजय अभियान के लिए निकलने लगे। मैसूर के दशहरे में उसी की छवि मिलती है। लखनऊ के पुराने दिनों की रामलीला को याद करते हुए चौक के निवासी रामेश्वर प्रसाद कहते हैं कि उन दिनों राजतिलक की शोभायात्रा में यहियागंज के व्यापारी भेंटों-सौगातों से कलाकारों को लाद देते थे। उन दिनों लोगों की भागीदारी देखते बनती थी। हालांकि समिति के संयोजक हरिश्चन्द्र अग्रवाल कहते हैं कि लोगों की भागीदारी कम नहीं हुई है। इस वर्ष भी ज्यादातर

प्रसंगों में कुर्सियां कम पड़ गईं और काफी लोगों ने खड़े खड़े ही रामलीला का अवलोकन किया।

लखनऊ पूर्व में भी अवध प्रान्त की राजधानी है। लक्ष्मण के नाम पर बसे होने के विश्वास और अयोध्या के निकट होने के कारण यह रामकथा का अविच्छिन्न अंग है। यहां दो दर्जन से भी अधिक संस्थाओं द्वारा रामलीला की जाती है। लखनऊ की रामलीलाओं की कई खूबियां हैं। ठाकुरगंज के बाबा हजाराबाग का राजतिलक प्रसिद्ध है तो ऐशबाग का भरत मिलाप, सदर का रावण वध प्रसिद्ध रहा है और रानीगंज की बारात।

रामलीलाओं में मिली-जुली संस्कृति की अन्तर्धारा

लखनऊ की रामलीला को जो तत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण बनाता है वह है इसका गंगा जमुनी रंग। लखनऊ की रामलीला में इस नगर की मिली जुली संस्कृति की अन्तर्धारा बहती है। देश के दूसरे हिस्सों में लोगों को यह जानकर आश्वर्य हो सकता है कि चौक में एक रामलीला ऐसी है कि जिसमें संवाद उर्दू-फारसी में होते हैं। चौक की फूलवाली गली की शिशु बाल रामलीला में बोले जाने वाले कुछ संवादों के उदाहरण देखिए- 'ऐ खाक का पुतला ऐ खाकसार, खाक में ही मिल जाना है, फिर खाक का पता लगाओगे क्या, मिलता क्या खाक ठिकाना है' या

फिर 'तहजीब ही अजीब है, शोखे गजब के साथ, देता है मुझको गालियां, वो भी अदब के साथ'।

लखनऊ की गंगा जमुनी तहजीब का असर इसकी रामलीला पर भी है जो इसमें साम्प्रदायिकता सौहार्द का रंग भरता है। पुतले और मुखौटे तो देश के ज्यादातर हिस्सों में मुस्लिम कलाकार ही बनाते हैं लेकिन लखनऊ की प्राचीन रामलीलाओं को नवाबों का संरक्षण मिला है। बाबा हजाराबाग की रामलीला नवाब आसफुद्दौला के संरक्षण में आरम्भ हुई तो ऐशबाग की रामलीला नवाब गाजीउद्दीन हैदर के काल में। चौक की रामलीला में उर्दू फारसी के संवादों का कारण यही है कि चौक मुस्लिम बाहुलेय क्षेत्र है और इसके दर्शकों में मुस्लिम ख्वातीनों की भी अच्छी खासी संख्या होती है। रामलीला के पात्रों की कमान खलील और रईस भाई जैसे लोगों के हाथ में होती है। इसी कारण राधेश्याम रामायण पर आधारित इस रामलीला में उर्दू और फारसी की ऐसी शायरी शामिल की गई है जो लोगों में जोश पैदा करती है। चौक की फूलवाली गली में होने वाली इस रामलीला से जुड़े लोग उर्दू फारसी के अच्छे जानकार रहे हैं। इस रामलीला के आरम्भ में नाटककार शहरयार मिर्जा जैसे लोग भी इससे जुड़े रहे जिन्होंने बहुत वर्षों तक पात्रों को उर्दू के तलफ्फुस और संवादों की अदायगी सिखाई।

बख्शी का तालाब क्षेत्र में होने वाली रामलीला इस दृष्टि से मशहूर है जिसमें ज्यादातर कलाकार मुस्लिम बन्धु होते हैं। 1972 में शाहाबाद के निवासी डॉ.

मुजफ्फर हुसैन ने अपने मित्र मैकूलाल यादव के साथ इस रामलीला की शुरूआत की थी और पिछले 37 वर्षों से इस रामलीला में हिन्दू-मुस्लिम कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लेते आए हैं। इस रामलीला की आयोजन समिति के प्रबन्धक हैं डॉ. मंसूर अहमद जिन्होंने इसमें पहले रावण की भूमिका निभाई थी। समिति के उपाध्यक्ष हाकिम रजा, उप प्रबन्धक आशिद अली, मेला व्यवस्थापक नूर मोहम्मद एवं नमन अली हैं। रामलीला के निर्देशक मोहम्मद साबिर खान और मोहम्मद नसीम खान होते हैं और इसमें करीब 30 हिन्दू-मुस्लिम कलाकार भाग लेते हैं। पिछले कुछ वर्षों से राम-लक्ष्मण की भूमिका दो सगे भाइयों सरवर रजा और सलमान रजा ने निभाते हैं जबकि दशरथ एवं रावण की खुद मोहम्मद नसीम। इसी प्रकार आलमनगर की रामलीला में लम्बे समय तक मोहम्मद जमाल मियां सचिव रहे हैं। रामलीला में विभिन्न धर्मों के बीच आपसी मेल-मिलाप की चर्चा में आलमबाग की रामलीला में रावण की भूमिका करने वाले वडन साहब की चर्चा जरूरी है जो लगभग 30 वर्षों तक इसाई धर्म में अपनी पूरी आस्था के बावजूद यह भूमिका निभाते रहे। लोग उनकी पुरअसर संवाद अदायगी, जानदार अभिनय और बुलन्द आवाज के कायल थे।

लखनऊ की प्राचीनतम रामलीला में से एक ऐशबाग की रामलीला को लखनऊ के नवाबों का संरक्षण मिला है। हालांकि लखनऊ पर कार्य करने वाले लेखक ऐशबाग की रामलीला को नवाब गाजीउद्दीन हैदर के शासनकाल में आरम्भ किया गया मानते हैं।योगेश प्रवीन के अनुसार, '1814 का वर्ष लखनऊ के लिए दो

नई घटनाओं का वर्ष था। नवाब गाजीउद्दीन हैदर हाकिमें सल्तनत हुए थे और उसी साल यहां के सुप्रसिद्ध ऐशबाग में एक नई रामलीला का सूत्रपात हुआ था। इस रामलीला की बुनियाद महन्त रामलला शरण द्वारा रखी गई थी। महन्त जी लक्ष्मण घाट अयोध्या के महन्त युगलानन्द जी के शिष्य थे। लेकिन 1857 की क्रान्ति ने उनको वहां से स्थानान्तरित कर दिया और फिर 1870 में उनकी मृत्यु हो गई। महन्त जी की अवध के दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके दौर में अयोध्या से बड़ी संख्या में साधु सन्त लखनऊ आते थे और दशहरे का भव्य आयोजन किया जाता था। इन महात्माओं के ठहरने तथा खाने-पीने का विशेष प्रबन्ध किया जाता था जिसके लिए सभी धर्मावलम्बियों से सहयोग प्राप्त होता था। इसके लिए दरबार की ओर से बकायदा शाही फरमान जारी किया गया था। ऐशबाग की रामलीला को अवध के प्रथम बादशाह और उनके बाद के सभी ताजदारों का संरक्षण प्राप्त रहा है। बादशाह खुद और शाही परिवार के लोग ऐशबाग के दशहरे में शिरकत करते थे।

लखनऊ तथा आसपास के इलाकों में होने वाली रामलीलाओं की सूची इस प्रकार है-

सदर

मौसमगंज

चौक

राजाजीपुरम

मड़ियांव

खजुआ

डालीगंज

खदरा

महोना

रानीगंज

बागठोला

गोसाइगंज

आलमबाग

बख्शी का तालाब

इटौंजा

त्रिवेणीनगर

कल्याणपुर

लीलाओं में लोकप्रिय

बाबा हजाराबाग(ठाकुरगंज)- राजतिलक

ऐशबाग-भरत मिलाप

सदर-रावण वध

रानीगंज-बारात।

श्री रामलीला समिति ऐशबाग

स्थान-श्री रामलीला परिसर, ऐशबाग, वाटर वर्क्स रोड, लखनऊ

पहला दिन- गणेश पूजन, आकाशवाणी, रामजन्म, ताड़का वध

दूसरा दिन-धनुष यज्ञ, सीता स्वयंवर, परशुराम संवाद, राम विवाह

तीसरा दिन-दशरथ कैकेई संवाद, राम वन गमन, केवट संवाद

चौथा दिन-कैकेई भरत संवाद, चरण पादुका लाना, पंचवटी प्रस्थान

पांचवा दिन-सीता हरण, जटायु वध, राम शबरी संवाद

छठा दिन-राम सुग्रीव मिलन, बाली वध, लंका दहन

सांतवा दिन-कुंभकरण वध, लक्ष्मण शक्ति, हनुमान का संजीवनी लाना

आठवां दिन-मेघनाद वध

नौवां दिन-राम को इन्द्र का रथ, देवताओं द्वारा अस्त्र-शस्त्र देना

दसवां दिन-रावण वध, विजयादशमी

ग्यारहवां दिन-राम का अयोध्या प्रस्थान, भरत मिलाप

बारहवां दिन-राम का राज्याभिषेक, लवकुश लीला

अयोध्या और फैजाबाद की रामलीला

प्राचीन तीर्थों में अयोध्या की गणना होती आई है और धार्मिक ग्रंथों में इसे मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से जोड़ा गया है। रामकथा के नायक इसी इक्ष्वाकु वंश में पैदा हुए और उनके पिता दशरथ को इस वंश में 63 वां शासक माना

गया है। राम का युग त्रेता कहा गया है। इतिहास में कहा गया है कि मौर्यों, गुप्तों और कन्नौज के शासकों के अधीन होता हुआ यह नगर तुर्कों और फिर शकों के साम्राज्य में आया। जब अकबर ने अपने साम्राज्य को सूबों में विभक्त किया था तो अवध सूबे की राजधानी अयोध्या को बनाया गया था। बाद में अयोध्या के निकट फैजाबाद नगर की स्थापना हुई। नवाबों के दौर में पहले फैजाबाद और फिर लखनऊ अवध की राजधानी हुई। थोड़े समय पहले राज्य की सरकार ने फैजाबाद का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि रामकथा में अयोध्या का कितना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। रामकथा में अयोध्या राम की नगरी रही है। ऐसे में रामलीला की दृष्टि से अयोध्या और उसके निकटवर्ती फैजाबाद का भी काफी महत्व है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि अयोध्या और अवध के क्षेत्रों में रामलीला देखने का सुख दर्शकों और श्रद्धालुओं को वर्ष में दो बार प्राप्त हो जाता है। माना जाता है कि अयोध्या में रामलीला के प्रवर्तक संत तुलसीदास ही थे। उन्होंने जहां रामलीला का आरम्भ किया उसे लोग तुलसी चौरा के नाम से जानते हैं। इसका प्राचीन नाम बरगदहिया था। मुख्यरूप से रामलीला नवरात्रि और विजयादशमी के आसपास प्रदेश के दूसरे क्षेत्रों की तरह होती है लेकिन इसके साथ ही रामनवमी पर धनुषयज्ञ की रामलीला भी यहां होती है।

अयोध्या और फैजाबाद के साथ ही गोंडा, बस्ती, सीतापुर, बहराइच जैसे क्षेत्रों में भी धनुषयज्ञ की रामलीला की धूम रहती है।

प्रमुख रामलीलाएं

-फैजाबाद की रामलीलाएं-

फतेहगंज

साहबगंज

चौक बजाजा

कोठा पार्चा

जप्ती वजीरगंज

शंकरगढ़

रुदौली

मया बाजार

तारुन

-अयोध्या की रामलीलाएं-

लक्ष्मण किला

राजेन्द्र प्रसाद रोड

स्मारक सदन

बिअहुती भवन

कनक भवन

प्रमुख रामलीला समितियां

साकेत आदर्श रामलीला मंडल

अवध आदर्श रामलीला मंडल

संत तुलसीदास रामलीला समिति

बजरंग विजय आदर्श रामलीला मंडल

अयोध्यास्थ श्री रामलीला महोत्सव समिति

बाल रामलीला समिति

बाल रामलीला कमेटी

चन्द्रदेव आदर्श रामलीला समिति

प्राचीन राजद्वार की लीला

अयोध्या की राजद्वार की रामलीला प्राचीन रामलीलाओं में से है और माना जाता है कि इसे गोस्वामी तुलसीदास द्वारा आरम्भ किया गया

था। आरम्भ में इसे तुलसीचौरा की रामलीला के नाम से जाना जाता था। बाद में इसे अयोध्या के राज परिवार का सानिध्य मिला। तब इसे राजद्वार की लीला कहा जाने लगा लेकिन यह प्राचीन रामलीला अब बंद है। अयोध्या की प्राचीन रामलीलाओं में दशरथ मंदिर (बड़े स्थान) की रामलीला भी शामिल है लेकिन अब इसका स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा।

साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल

फैजाबाद में तारुन के लालगंज बाजार की रामलीला में साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल देखने को मिलती है क्योंकि हिन्दुओं में पूजनीय श्रीराम के जीवन से जुड़ी इस लीला में बड़ी संख्या में मुस्लिम बंधु भाग लेते हैं। लालगंज बाजार वहां के नारायणपुर गांव का हिस्सा है जो कलाकारों का गांव है क्योंकि यहां संगीत वाद्यों से जुड़े बड़ी संख्या में कलाकार हैं। रामलीला में भी नूर मोहम्मद तबले पर और मोहम्मद लतीफ हारमोनियम पर लंबे समय से संगत करते आ रहे हैं जबकि मोहम्मद मुस्लिम, मोहम्मद अनीस नवसाद, नौशाद, मोहम्मद सोहेल और मोहम्मद जमील इसमें महत्वपूर्ण भूमिकाओं में होते हैं। यह रामलीला करीब 50 से अधिक पुरानी है। इसे शुरू तो हिन्दुओं द्वारा ही किया गया था लेकिन बाद में इसमें मुस्लिम बंधु भी बड़ी संख्या में जुड़ते चले गए जिसने इस रामलीला को एक गंगा जमुनी रंग दे दिया। नौशाद खरदूषण की, सोहेल मेघनाथ की, अनीस बालि की और जमील

मारीच एवं अंगद की भूमिकाओं में होते हैं। इस रामलीला की शुरूआत झांकी के रूप में शिव दर्शन सिंह द्वारा की गई थी। उनके निधन के बाद उनके बेटे बलदेव शरण सिंह ने इसकी जिम्मेदारी संभाली और उन्हीं के दौर में बड़ी संख्या में मुस्लिम बंधु इस रामलीला से जुड़े।

इलाहाबाद की रामलीला

इलाहाबाद उत्तर प्रदेश ही नहीं, देश का प्राचीन और प्रमुख धार्मिक नगर है। इसका प्राचीन नाम प्रयाग है और संगम के कारण इस नगर का विशेष महत्व रहा है। इलाहाबाद में रामलीला की प्राचीन परंपरा है और

वाराणसी की तरह यहां भी मान्यता है कि गोस्वामी तुलसीदास ने रामलीला का आरम्भ यहां किया। रामलीला का उल्लेख अबुल फजल द्वारा लिखे गए 'आईने अकबरी' में भी मिलता है जो बादशाह अकबर के जीवन और शासन पर आधारित ग्रंथ है। गौरतलब है कि अकबर गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे। कुछ ग्रंथों में यह भी उल्लेख मिलता है कि एक बार बादशाह अकबर ने तुलसीदास की ख्याति को देखते हुए उन्हें दरबार में बुलाकर कोई चमत्कार दिखाने को कहा। यह बात तुलसीदास को पसंद नहीं आई। तुलसीदास के इंकार करने पर उन्हें बंदी बना लिया गया। कहा जाता है कि तुलसीदास को बंदी किए जाने के बाद बंदरों का उत्पात शुरू हो गया। अकबर को बताया गया कि तुलसीदास को बंदी बनाए जाने के कारण हनुमान के क्रोध का सामना करना पड़ रहा है जिस पर तुलसीदास को रिहा कर दिया गया। यहां यह बताना भी प्रासंगिक होगा कि अकबर ने तुलसीदास से काशी प्रवास के दौरान अस्सी घाट पर भेंट की थी जिस पर मुगलकालीन पेंटिंग भी मिलती है। अकबर द्वारा रामसिय सिक्का भी चलाया गया है। यह भी कहा जाता है कि अकबर ने रहीम के हाथों तुलसीदास को स्वर्ण मुद्राएं भी भेजवाई थी।

'आईने अकबरी' से यह भी पता चलता है कि तुलसीदास ने प्रयाग में रामलीला की शुरूआत कराई और खुद अकबर भी इसे देखने गए थे। ग्रंथों से यह भी पता चलता है कि रामलीला देखकर अकबर भावविभोर

हो गए और उन्होंने रामलीला के एक प्रसंग में सीताजी की डोली को कंधा भी दिया।

बताते हैं कि बढ़ती भीड़ के कारण बाद में इसका स्थान बदल गया और यह पथरचट्टी में होने लगा। रामलीलाओं का इतिहास देश के स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ा है और रामलीला चौकियों को स्वतंत्रता संग्राम में उपयोग किए जाने का प्रमाण भी मिलता है। रामलीलाओं के साथ ही रामदल और रामबारात की भी यहां परम्परा है।

-इलाहाबाद की रामलीलाएं-

पथरचट्टी

पजावा

दारागंज

अलोपीबाग

जीटीबी नगर

बाघंबरी

प्रमुख रामलीला समितियां

पथरचट्टी रामलीला कमेटी

दारागंज रामलीला कमेटी

महंत हाथीराम पजावा रामलीला कमेटी

कटरा रामलीला कमेटी

बाल रामलीला समिति (सिविल लाइंस)

अल्लापुर रामलीला समिति

अलोपीबाग रामलीला कमेटी

कानपुर की रामलीला

उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी कहे जाने वाले कानपुर में भी कई स्थानों पर रामलीलाएं होती आई हैं लेकिन यहां परशुरामी को काफी लोकप्रियता प्राप्त है। परशुरामी से तात्पर्य उस प्रसंग से है जब धनुषयज्ञ

की लीला के दौरान लक्ष्मण और परशुराम के बीच संवाद होता है। बताते हैं कि इसकी शुरूआत सन् 1912 के करीब हुई जब पंडित ज्वाला प्रसाद त्रिपाठी ने आनंद मंगल मंडल बनाकर धनुषयज्ञ की लीला शुरू कराई। परशुरामी में कुछ धाराएं भी विकसित हुईं। किसी में कलाकार मधुर गायकी को आधार बनाता है तो कोई कलाकार संस्कृतनिष्ठ गद्य का सहारा लेता है।

-कानपुर की रामलीलाएं-

परेड

साकेत नगर

गुजैनी

पनकी

गंगा विहार

किदवई नगर

गीता नगर

कृष्णा नगर

रेल बाजार

कल्याणपुर

अरमापुर

गुजैनी

अकबरपुर (कानपुर देहात)

प्रमुख रामलीला समितियां

रामलीला सोसाइटी, परेड मैदान

सार्वजनिक रामलीला कमेटी

साकेत नवयुवक मंडल

श्री श्री रामलीला समिति, अर्मापुर इस्टेट

परशुरामी के लोकप्रिय कलाकार

बाबूलाल अवस्थी, गोरेलाल त्रिपाठी, व्यास नारायण वाजपेयी, राधाकृष्ण वाजपेयी, जगदीश अवस्थी, परशुराम दीक्षित, कृष्ण मुरारी त्रिपाठी, लक्ष्मी नारायण वैद्य, कल्याणी प्रसाद वैद्य, तेज नारायण वाजपेयी, चन्द्र प्रकाश दीक्षित, पी.एन.चतुर्वेदी, श्रीकृष्ण त्रिपाठी

कोंच की रामलीला

कोंच बुन्देलखंड के जालौन का क्षेत्र है जो रामलीला की समृद्ध के कारण प्रसिद्ध है। बताते हैं कि कोंच से पूर्व इससे तीन किलोमीटर दूर पडरी ग्राम में रामलीला होती थी जो काफी लोकप्रिय थी लेकिन एक बार वहां दो गुटों में संघर्ष हो गया। इस विवाद का समाधान कराने कोंच से

वहां के एक धनी व्यक्ति चौधरी बिहारी लाल गए थे। विवाद की समाधान की दिशा में वे अपने साथ पडरी की मूर्तियां कोंच लेते आए और फिर कोंच में रामलीला का आरंभ हो गया।

कोंच की रामलीला के बारे में कई पुस्तकों के लेखक अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' के अनुसार, ' यहां लगभग डेढ़ सौ वर्ष प्राचीन रामलीला का 21 दिवसीय अनुष्ठानिक आयोजन नगर के विभिन्न स्थानों, मंचों, देवालयों, बाग-बगीचों में लीला तथा मेला के रूप में अत्यन्त मर्यादा के साथ किया जाता है। रामलीला के पांच प्रमुख पात्रों राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा सीता की मूर्ति मानकर वेदमंत्रों से उनका अभिषेक करके उनमें देवत्व की प्रतिष्ठा की जाती है। पात्र किराए अथवा पारिश्रमिक पर नहीं आते हैं। नगर की रंगमंचीय प्रतिभाएं ही संपूर्ण लीलाओं में स्वेच्छया निःशुल्क अभिनय ही नहीं करते हैं अपितु रामलीला समिति को आर्थिक सहयोग भी देते तथा दिलाते हैं। इस रामलीला के आयोजन से नगर में रंगमंच के विविध पक्षों का अभूतपूर्व विकास हुआ। यह रामलीला न केवल उत्तर भारत की लोकनाट्य परम्परा का विशिष्ट अध्याय है अपितु मंचीय लोक कलाओं में जन सहभागिता का अनुपम उदाहरण है। ..कोंच नगर में 1860 ई. के लगभग प्रारंभ हुई रामलीला रामनगर (काशी) की रामलीला के लगभग समकालीन है। रामनगर की रामलीला 1830 ई. में काशीराज उदित नारायण सिंह के संरक्षण में प्रारंभ हुई थी जबकि कोंच की रामलीला यहां के रईस चौधरी बिहारी

लाल निकटवर्ती ग्राम पडरी से 1860 ई. में यहां लाए थे।' (सांस्कृतिक बुन्देलखंड, अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद')